

श्री गणेश चालिसा

जय गणपतिसदगुणसदन, कवविर बदन कृपाल ।
वधिं हरण मंगल करण, जय जय गरिजालाल ॥

जय जय जय गणपति गणराजू । मंगल भरण करण शुभ काजू ॥
जै गजबदन सदन सुखदाता । वशिव वनियक बुद्धि विधाता ॥
वकर तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन । तलिक त्रपुण्ड भाल मन भावन ॥
राजत मर्णा मुक्तन उर माला । स्वरण मुकुट शरि नयन वशाला ॥
पुस्तक पाणा कुठार त्रशूलं । मोदक भोग सुगन्धति फूलं ॥
सुन्दर पीताम्बर तन साजति । चरण पादुका मुनिमन राजति ॥
धर्ना शिविसुवन षडानन भ्राता । गौरी ललन वशिवखियाता ॥
ऋद्धसिद्धि तिव चंवर सुधारे । मूषक वाहन सोहत द्धारे ॥
कहौ जन्म शुभकथा तुम्हारी । अता शुचि पावन मंगलकारी ॥
एक समय गरिरिज कुमारी । पुत्र हेतु तप कीन्हो भारी ॥
भयो यज्ञ जब पूरण अनूपा । तब पहंच्यो तुम धरि द्धजि रुपा ॥
अतथि जानि कै गौरि सुखारी । बहुवधि सेवा करी तुम्हारी ॥
अता प्रसन्न है तुम वर दीन्हा । मातु पुत्र हति जो तप कीन्हा ॥
मलिहा पुत्र तुहा, बुद्धि वशाला । बनि गर्भ धारण, यहि काला ॥
गणनायक, गुण ज्ञान नधिना । पूजति प्रथम, रुप भगवाना ॥
अस कहि अन्तर्धान रुप है । पलना पर बालक स्वरुप है ॥
बनि शशि, रुदन जबहि तुम ठाना । लखि मुख सुख नहि गौरि समाना ॥
सकल मगन, सुखमंगल गावहि । नभ ते सुरन, सुमन वर्षावहि ॥
शम्भु, उमा, बहु दान लुटावहि । सुर मुनिजिन, सुत देखन आवहि ॥
लखि अता आनन्द मंगल साजा । देखन भी आये शनि राजा ॥
नजि अवगुण गुनि शनिमन माहीं । बालक, देखन चाहत नाहीं ॥
गरिजा कछु मन भेद बढ़ायो । उत्सव मोर, न शनि तुहा भायो ॥
कहन लगे शनि, मन सकुचाई । का करहौ, शशि मोहा दिखाई ॥
नहि विश्वास, उमा उर भयऊ । शनि सौं बालक देखन कहाऊ ॥
पडतहि, शनि दृग कोण प्रकाशा । बालक सरि उड़गियो आकाशा ॥
गरिजा गरिं वकिल है धरणी । सो दुख दशा गयो नहीं वरणी ॥
हाहाकार मच्यो कैलाशा । शनि कीन्हो लखि सुत को नाशा ॥
तुरत गरुड चढ विषिणु सधायो । काटा चकर सो गज शरि लाये ॥
बालक के धड़ ऊपर धारयो । प्राण, मन्त्र पढ शंकर डारयो ॥
नाम गणेश शम्भु तब कीन्हे । प्रथम पूज्य बुद्धि नधि, वन दीन्हे ॥
बुद्धि परीक्षा जब शवि कीन्हा । पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हा ॥
चले षडानन, भरमा भुलाई । रचे बैठ तुम बुद्धि उपाई ॥
चरण मातुपति के धर लीन्हें । तनिके सात प्रदक्षिणा कीन्हें ॥
धर्ना गणेश, कहि शवि हयि हरषे, नभ ते सुरन सुमन बहु बरसे ॥
तुम्हरी महिमा बुद्धि बिडाई । शेष सहसमुख सके न गाई ॥
मैं मतहीन मलीन दुखारी । करहुं कौन वधि वनिय तुम्हारी ॥
भजत रामसुन्दर प्रभुदासा । जग प्रयाग, ककरा, दुर्वासा ॥
अब प्रभु दया दीन पर कीजै । अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजै ॥ ॥

श्री गणेश यह चालीसा, पाठ करै कर ध्यान । नति नव मंगल गृह बसै, लहे जगत सन्मान ॥
सम्बन्ध अपने सहस्र दश, ऋषि पंचमी दनिश । पूरण चालीसा भयो, मंगल मूर्ति गणेश ॥

